काशी का लोकरंग और भारतेन्दु

- डॉ. ऋतु वाष्णेय गुप्ता

काशी का इतिहास मानव सभ्यता और संस्कृति का इतिहास है। प्राचीनकाल से ही काशी भारतीय संस्कृति साधना एवं साहित्य की केन्द्रस्थली रही है। इसे विद्या नगरी होने के साथ ही धर्म नगरी होने का महनीय गौरव प्राप्त है। साधु, सन्तों, मनीषियों, दार्शनिकों, साहित्यकारों, कलाकारों की आश्रमस्थली के रूप में काशी की प्रसिद्धि अति प्राचीनकाल से है। काशी भारतवर्ष की प्राचीनतम एवं पवित्रतम नगरी है। इसकी गौरवशाली परम्परा के दर्शन भारतीय वाङ्मय के माध्यम से होते हैं। आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व जब अधिकांश यूरोप में सभ्यता का सूर्योदय नहीं हुआ था, जब रोम अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील था, जब पश्चिम में आज के उन्नतिशील राष्ट्रों का कोई भी अस्तित्व न था उस समय काशी वैभव, सम्पदा और ऐश्वर्य में सबसे आगे थी तथा वह धर्म, सभ्यता व संस्कृति के सर्वोच्च शिखर पर थी।

काशी मात्र एक नगरी नहीं है। स्वयं में एक संस्कृति और इतिहास है वैदिक युग से आज तक इसका मूलाधार परिवर्तित नहीं हुआ। काशी की संस्कृति अवशेष मात्र नहीं है। गली-गली, कण-कण में आज भी जीवित है। काशी में अपनी प्राचीन संस्कृति को पालने की क्षमता है। फलतः अनेक आक्रमणों, प्रत्याक्रमणों और झंझावातों को सहती हुई इसकी अस्मिता अक्षुण्ण है। काशी रोम, मक्का, जरुसलम से भी अधिक प्राचीन है। यह एक अविमुक्त क्षेत्र है साथ ही साथ इसे सार्वभौम नगरी भी कहा गया है। ऋग्वेद में काशी को 'आप्नानतीर्थ' कहा गया है। अर्थात् जीवन के विकास के जितने घट-पहल है, सबकी किरणें काशी में छिटकती दिखती हैं। काशी धर्मतीर्थ, कामतीर्थ और मोक्ष तीर्थ है।

काशी में सभी धर्म, सम्प्रदाय, पंथ, भाषा, वेश, रंग, लिंग के लोगों का समन्वय स्थल रहा है। यहाँ गुजरात है, महाराष्ट्र है, कर्नाटक है, आन्ध्रा है, पंजाब है, बिहार है। मुहल्लों में बंटी काशी में भारत के लगभग सभी राज्यों की संस्कृति की छटा दिखाई पड़ती है जो भी यहाँ आया 'बनारसी' हो गया। बौद्धों और जैनियों ने यहाँ से धर्म विस्तार यात्रा प्रारम्भ की। महावीर और बुद्ध को भी काशी की धरती से ही ज्ञान का प्रकाश मिला। दार्शनिकों ने दर्शन का विस्तार किया, साहित्यकारों ने साहित्य को नयी दिशा दी। साधकों ने साधना से ईश्वर का साक्षात्कार किया। कलाकारों ने कला की नई परम्परा बनायी। संगीतज्ञों ने संगीत के लय, सुर, तालों को 'बनारसी घरानों' में बांधा। नर्तकों के थिरकते पाँवों ने बनारस केक अल्हड़ और फक्कड़पन को उभारा। धीरे-धीरे बनारस व्यापार, कला, साहित्य, संगीत का केन्द्र बन गया।

काशी ज्ञान की पुरी और गंगा ब्रह्मदेवी है। ये यहाँ की अध्यात्म सूत्र है। इन्हीं की नित्य नयी व्याख्या जीवन की सार्थकता है। यदि ज्ञान इस मानव जीवन के लिये आवश्यक है और इस ज्ञान का अंतिम प्रयोजन ब्रह्म का साक्षात्कार है तो दोनों की उपलब्धि काशी होनी चाहिए। तभी काशी में निवास करने और गंगा में स्नान करने की चरितार्थता है। काशी और गंगा के स्थूल प्रतीकों के अर्थों को भारी सम्मति से सींचा गया है। यह देवों की नगरी काशी है जहाँ मनुष्य और देव एक धरातल पर मिलते हैं। इसी

कारण काशी सच्चा तीर्थ है। शंकराचार्य का दृष्टान्त इसका साक्षी है। स्थूल ज्ञान के द्वारा उन्होंने ब्रह्म की आराधना की, पर उपनिषदों में प्रतिपादित रहस्य तत्त्व का साक्षात्कार उन्हें काशीश्वर के रूप में यहाँ ही प्राप्त हुआ। चैतन्य आत्मा ब्रह्म भाव है। यही शंकराचार्य का काशी में प्राप्त अनुभव था। काशी में बसने का तात्पर्य है यहाँ के आध्यात्मिक आदर्श में भाग लेना। इसकी युक्ति जो जान सके उसी के लिए काशी चरितार्थ है।

"काशते इति काशी" अर्थात् जो प्रकाशित करता है वह काशी है। काशी प्रकाश स्वरूप है। "काश्यते प्रकाशते सर्वविधं ज्ञानंयस्यां सा काशी" जो अज्ञानान्धकार को दूर करके ज्ञान का सब प्रकार से प्रकाश फैलाये, काशी है। काशी ज्ञान की नगरी है। ज्ञान मोक्ष प्रदाता है। मोक्ष जीवन का परम लक्ष्य है। उस परमलक्ष्य की प्राप्ति पुण्य सलिल प्रवाहिनी गंगा के तट स्थित काशीवास से अनायास ही सुलभ हो जाती है।

मुक्ति जन्म महि जानि, ज्ञान खानि अघ हानि हर।

जहँ बस संभु भवानि, सो कासी सेइअ कस न ।।

वह काशी जो मोक्षदायिनी है, तीनों लोकों से न्यारी है। जहाँ सभी देवों का, सभी तीर्थो का वास है, जो भूत भावन भगवान शंकर की त्रिशूल के अग्रभाग पर विराजमान है, जिसका कंकड़-कंकड़ शिव स्वरूप है, ब्रह्म स्वरूप है। सत्य स्वरूप है, आनन्द स्वरूप है, विलक्षण क्षमताओं से युक्त है। यह अपने शरण में आये हुए उन समस्त प्राणियों को उनके पापों से उसी प्रकार मुक्त कर देती है जैसे पारस पत्थर के स्पर्शमात्र से लोहा अपनी सभी बुराइयाँ त्याग सुवर्ण बन जाता है। पुराणों ने काशी को स्वर्ग से भी उच्चतर बताया है।

भूमिष्ठापि यात्राभूस्त्रिदिवतोऽप्युच्चैरधः स्थापिया।

यावद्धा भुवि मुक्तिदास्युरमृतंयस्यांमृता जन्तवः। (स्कन्द पुराण)

अर्थात् जगत की सीमा से आबद्ध होते हुए भी यह काशी मोक्षदायिनी है। यह स्वर्ग से भी बढ़कर है पृथ्वी से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

कहा गया है 'काश्याँ मरणान् मुक्ति' यह वचन सभी भारतीयों के मन को काशी के भोग से मोक्ष चाहता है। इसके लिये सभी सम्प्रदाय के दार्शनिक तथा प्रणेता ऋषियों ने अपनी सूक्ष्मेक्षिका से भिन्न-भिन्न मार्गो का दिग्दर्शन कराया है। पंचक्रोशथिष्ठिता काशी नगरी इसके लिए अनायास ही मोक्षदायिनी है। वेदोक्त वचन 'ऋतज्ञानन मुक्ति' 'काश्याँ मरणान् मुक्ति' दोनों श्रुतियों का समन्वय इस आशुतोष की अनुकम्पा से तारक मंत्रोपदेश द्वारा स्वतः ही हो जाता है। यह नगरी सर्वथा सर्वधर्म, ज्ञान विचार का समन्वय करती है। इसलिए कहा गया है कि 'पूर्णतया स्तुत्या तथा धन्या' काशी वाराणसी पुरी।

भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति मूलतः तीन धाराओं से होती है- वैदिक, आगमिक और पौराणिक। काशी इन तीनों धाराओं का संगम स्थली है। संस्कृति की त्रिवेणी में स्नान करने वाले विद्वान इस नगरी की प्राचीनता और सर्वश्रेष्ठता को स्वीकार करते हुए भगवान् आशुतोष अविमुक्त काशीश्वर विश्वनाथ सर्वशास्त्र

ज्ञानोद्गम स्थल के रूप में स्वीकार करते हैं। विश्वस्वरूपा काशी नगरी में भगवान् शिव की तरह काशी अनादि काल से अपने गौरवमयी सांस्कृतिक परम्परा को बनाये हुए सृष्टि काल से अविच्छिन्न रूप में विद्यमान है।

वैदिक संस्कृति में त्याग, तपोवन, तपस्या इन तत्त्वों की प्रधानता मिलती है। ऋषियों का जीवन इन्हीं तत्त्वों से परिपूर्ण है। वे भौतिक ऐश्वर्य से दूर रहकर त्याग, तपस्यापूर्ण जीवन तपोवन में व्यतीत करते हुए आध्यात्मिक तत्त्वों से विशेष प्रेम रखते थे। त्यागपूर्ण भोग का निर्देश बताता है कि भगवान् की सया स्वीकार करते हुए 'इदमम्म' के अनुसार किसी के धन की इच्छा न करते हुए सांसारिक भोग की कल्पना करनी चाहिए। इस त्यागमयी भारतीय संस्कृति की मौलिक स्थिति यह है कि स्वतः भगवान् विश्वनाथ महाश्मशान में रहकर माता अन्नपूर्णा से भिक्षा लेकर सम्पूर्ण जीवों को तृप्त करते हैं। यह काशी की विशेषता है। नित्य साधना और समाधि में भगवान् का अनावरण त्याग की ओर संकेत करता है।

काशी केवल शिव की नगरी नहीं, ३३ करोड़ देवताओं का तीर्थ भी है। ब्रह्मा, विष्णु, देवियाँ, गणेश, भैरव, आङ्गों दिशाओं के दिग्पाल, दिन और रात के रक्षक, सूर्य, हजारों गण, नागाओं और यक्षों का यहाँ वास है। काशी की वर्तमान जनसंख्या से कई गुना देवताओं की संख्या होने के कारण इसे दैवीय नगर का रूप प्रदान किया गया है। कहते हैं कि यहाँ हर कदम पर शिव और कोई न कोई दैवीय शक्ति विद्यमान है। काशी सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का केन्द्र है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को शक्ति यहीं से प्राप्त होती है।

काशी न केवल हिन्दुओं का, बल्कि सभी धर्मों, सम्प्रदायों की पवित्र एवं प्रिय नगरी है। अतएव यह स्वयं में एक इतिहास है, जहाँ सम्पूर्ण भारतीयता ही नहीं, मानवता के दर्शन होते हैं। उदारमान यह नगर उन सबका हो गया, जो धर्म विस्तार, शिक्षा में महारथ हासिल करने या व्यापार के सिलसिले में यहाँ बस गये। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के लोग यहाँ आकर बनारसी रस में गोता लगा रहे हैं। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि ने यहाँ की संस्कृति को समृद्ध किया है, इसमें संशय नहीं है। अतः यहाँ की संस्कृति एक ओर जहाँ हिन्दू धर्म के रूप में प्रसिद्ध है, वहीं बौद्ध, जैन धर्म के उद्भव स्थल के रूप में भी। अतः काशी विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों की संगम स्थली है। यह दार्शनिकों, साहित्यकारों, साधकों, कलाकारों संगीतज्ञों, नर्तकों की भी संगम स्थली है।

काशी में संस्कृत की पाण्डित्य परम्परा ने हिन्दी साहित्य परम्परा की आधारशिला तैयार की। संस्कृत की सुदृढ़ पाण्डित्य परम्परा न होती तो शायद हिन्दी साहित्य अपनी यह ऊँचाई न प्राप्त कर पाता जिसमें बनारस और हिन्दी साहित्य एक खास अर्थ में आबद्ध हो गये हैं। कबीर, रैदास और तुलसी का हिन्दी साहित्य ऋग्वेद से चलने वाली संस्कृत की विशाल परम्परा का भाष्य है। तुलसी की रामचरितमानस् में वेदों की ऋचाओं की गूंज सुनाई पड़ती है। कबीर ने हिन्दी भाषा के माध्यम से निर्गुण दर्शन का जो विकास किया उसके सूत्र उपनिषद् से लेकर अनेक ग्रन्थों में बिखरा पड़ा है। फलतः काशी में संस्कृति, दर्शन और साहित्य का अटूट सम्बन्ध स्पष्टतः दिखाई पड़ता है।

काशी अत्यन्त प्राचीन एवं महनीय है। इसकी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गरिमा की वृद्धि में, जिन विद्वानों ने योगदान किया है उनमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का नाम सदा अमर रहेगा। हिन्दी साहित्य के युग पुरुष बाबू हरिश्चन्द्र की सम्पूर्ण जीवन यात्रा केवल ३५ वर्षों की रही। उन्होंने इस अल्पकाल में हिन्दी साहित्य की समृद्धि और उन्नति के लिये जो योगदान किया है, वह इतिहास की अमूल्य निधि है। उपनिवेश काल में सम्पूर्ण भारतीय समाज की संरचना और उसके प्रकार्यों में बाह्य हितों के पोषण के लिये दबावमूलक परिवर्तन प्रस्थापित किये जा रहे थे। परिणामतः समाज की सम्पूर्ण जीवन शैली अभिशप्त-सी हो गयी थी। ऐसी विषम परिस्थिति में भारतेन्दु जी ने अपने सशक्त लेखनी के द्वारा न सिर्फ समाज की विद्रूपताओं और विषमताओं को उजागर किया वरन् देश की जनता को जाग्रत कर उन्हें राष्ट्रीय जागरण हेतु प्रेरित भी किया।

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने काशी में हिन्दी साहित्य को नयी दिशा दी, समृद्ध किया, स्थापित किया। भारतेन्दु का पूरा मण्डल था जो निरन्तर हिन्दी साहित्य की समृद्धि हेतु प्रयासरत रहता था। बहुप्रतिभा के धनी भारतेन्दु जी रचनाकार, सम्पादक, आलोचक, अनुवादक और प्रचारक सब थे। मुख्यतः इनके प्रभाव से वाराणसी हिन्दी का केन्द्र बन गया। इस युग में ब्रज और खड़ी बोली दोनों में स्थापनाएँ हुई। साहित्य में वैष्णव माधुर्य और मर्यादा एवं शैव मस्ती का संगम दिखाई पड़ा। काशी में साहित्य का नया वातायन खोलने का श्रेय भारतेन्दु जी को ही है। भारतेन्दु का मध्यकालीन तथा आधुनिक विचारधाराओं का सन्धि युग है।

भारतेन्दु जी की सभी रचनाओं में बनारस की झलक मिलती है। चाहे वह किसी भी सन्दर्भ में क्यों न लिखा गया हो। कारण यह है कि साहित्यकार का व्यक्तित्व उसके साहित्य में अवश्य ही प्रतिफलित होता है। इसलिए बनारस के जिन पक्षों का चित्रण भारतेन्दु जी ने प्रस्तुत किया है वह आज भी यथार्थ, मर्मस्पर्शी एवं जीवन्त है। भारतेन्दु जी की साहित्यिक रचना अनेक उन्नत विधाओं से परिपूर्ण है। उन्होंने नौ मौलिक नाटकों की रचना की है जिसमें भारत जननी, भारत-दुर्दशा, अंधेर नगरी आदि प्रमुख हैं। इसके अलावा अनूदित नाटक (विद्यासुन्दर, रत्नावली, दुर्लभ बन्धु आदि) की रचना की है। भारतेन्दु जी ने बालबोधिनी, हरिश्चन्द्र पत्रिका, कविवचन सुधा आदि पत्रिकाओं का सफल सम्पादन भी किया है।

भारतेन्दु जी ने लगभग अपनी सभी रचनाओं में प्राचीन तथा वर्तमान काशी की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप को पूरी जीवंतता के साथ उकेरा है। यहाँ का रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, बोली, तीज-त्यौहार, गीत-नृत्य प्रकृति वर्णन आदि सभी किसी न किसी रूप में भारतेन्दु जी की रचनाओं में उपस्थित हुये हैं। 'गंगा की जलधारा' कविता में शुद्ध प्राकृतिक वातावरण का दृश्य प्रस्तुत किया है-

नव उज्ज्वल जलधर, हार हीरक सी सोहति ।

बिच-बिच छहरति बूँद, मध्य मुक्ता मनि पोहति ।

'प्रेमयोगिनी' नाटिका में काशी के निवासियों का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है-

देखी तुमरी कासी लोगों, देखी तुमरी कासी। जहाँ विराजैं विश्वनाथ, विश्वेश्वरजी अविनासी।

X X X

मिलै न काहे भैया, गंगा मैया दौलत दासी

हमसे पूत कपूत की दाता मनिकनिका सुखरासी

भूखे पेट कोई नहिं सुतता, ऐसी है ई कासी।

किसी भी स्थान के सामाजिक तथा सांस्कृतिक रूपों को स्पष्ट करने हेतु आजीविका के साधनों का उल्लेख करना अति आवश्यक है। इसके अन्तर्गत काशी में धार्मिक कर्मकाण्ड, पुरोहित कर्म, पण्डागिरी, गंगा-पुत्र या घाटिए, साधु-संन्यासी, भिक्षुक भिखारी, ज्योतिषी, तान्त्रिक आदि कार्य आते हैं। इन सभी कर्मों का उल्लेख भारतेन्दु जी ने अत्यन्त ही सहज एवं संक्षिप्त रूप में उसके समग्र रूप के साथ अपनी रचनाओं में किया है।

भारतेन्दु युगीन समाज में विभिन्न त्यौहारों, मेलों और धार्मिक क्रिया-कलापों की स्थितियाँ आज से भिन्न थी। तत्कालीन वाराणसी में तरह-तरह के मेले, संस्कारगत क्रियाकलाप, त्यौहार यथा- नवरात्र, रामनवमी, दशहरा, गाजिमियाँ का मेला, नागपंचमी, रथयात्रा का मेला, निर्जला एकादशी, देव दीपावली, कार्तिक पूर्णिमा, पंचकोशी, शिवरात्री, होली और बुढ़वा मंगल आदि धूमधाम से मनाये जाते थे। भारतेन्दु जी की काव्य रचनाओं में वाराणसी के इन मेले व त्यौहारों का वर्णन विशिष्टता के साथ किया गया है। भारतेन्दु जी ने अपनी 'उत्सावली' रचना के अन्तर्गत काशी में वर्ष भर मनाये जाने वाले उत्सवों व त्यौहारों का तिथि सहित वर्णन प्रस्तुत किया है।

काशी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि सभ्यता के प्रारम्भिक काल से लेकर वर्तमान सन्दर्भों तक विभिन्न गुणात्मक मानवीय सम्बन्धों मूल्यों आचार-संहिताओं एवं व्यवहार प्रतिमानों से प्रभावित हुई है। सांस्कृतिक विकास के इस लम्बे आयाम में सामाजिक संरचना के धरातल पर नयी सोच और नयी जीवन शैली अलग-अलग कालों में विकसित होती रही है। कवि, लेखक और कथाकार सांस्कृतिक परिवेश में सूक्ष्म तथा अन्वेषणीय दृष्टि रखता है, क्योंकि विचार जगत् भौतिक क्रियाओं का प्रतिफल होता है और दोनों में पारस्परिक सम्बन्ध पाया जाता है। भारतेन्दु की सामाजिक एवं साहित्यिक दृष्टि काशी के सांस्कृतिक परिवेश से अभिलक्षित हुई और उन्होंने विधा को परिवेश से जोड़कर वैचारिक चिन्तन और ज्ञान-मीमांसा को नया आयाम दिया।

सहायक ग्रन्थ-सूची

आधुनिक काव्य धारा- डॉ. केसरी नारायण शुक्ल, प्रकाशक सरस्वती मन्दिर वाराणसी, 2007 वि.

उत्तर प्रदेश के प्राचीन नगर काशी का इतिहास- अशोक कुमार सिंह, 1984

डॉ. मोती चन्द्र विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

काशी की पाण्डित्य परम्परा-डॉ. बलदेव उपाध्याय

काशी के यात्राक्रम-कुबेरनाथ सुकुल

काशी का इतिहास-पं. भाऊ शास्त्री, सं. 2011

काशी महिमा प्रकाश- काशीनाथ झा

काशी सारस्वत साधना-पं. गोपीनाथ कविराज, पटना

नाटककार भारतेन्दु और उनका युग- आचार्य चन्द्रप्रकाश सिंह, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ, 1999

बनारस- पी.एम. चक्रवर्ती 1969 ई.

भारतेन्दु समग्र- सम्पादक हेमना वर्मा, प्रचारक ग्रन्थावली परियोजना, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी

भारतेन्दु की सामाजिक और धार्मिक भावना- केसरी नारायण शुक्ल, 1952

भारतेन्दु और भारतीय जागरण- सम्पादक शम्भूनाथ, कला प्रकाशन कलकत्ता

भारतेन्दु के नाटक-डॉ. भानुदेव शुक्ल, ग्रन्थ प्रकाशन, कानपुर, 1972

भारतेन्दु कालीन साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि -डॉ. कमला करनोडिया विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी, 1971

भारतेन्दु समग्र- सत्य हरिश्चन्द्र, सं. शर्मा, 1987, पृ. 390

प्रेमयोगिनी-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

-डॉ. ऋतु वाष्र्णेय गुप्ता सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग,

किरोड़ीमल महाविद्यालय,

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली